- गंगा नदी के किनारे जलज होमस्टे में भारतीय अतिथि-सत्कार और जीवन शैली का अनुभव ले सकते हैं । इन होमस्टे में मेहमानों की मेज़बानी गंगा प्रहरियों द्वारा की जाती है और उन्हें गंगा नदी के किनारे, वहाँ की संस्कृति और जीवन में पूरी तरह से रमने का मौका मिलता है।
- गंगा प्रहरियों द्वारा स्थानीय पारंपरिक कौशल और ज्ञान का उपयोग करके घरेलू अनाज, बाजरा, मक्का, चना और सूखे मेवों से स्वच्छतापूर्वक तैयार की गई मिठाइयों और व्यंजनों का स्वाद लें।
- व्यावसायिक रूप से प्रशिक्षित गंगा प्रहरियों द्वारा आयुर्वेदिक स्वास्थ्य और कल्याण सेवाओं जैसे की चेहरे व सिर की मालिश, मैनीक्योर, पेडीक्योर और मेहंदी लगवाने जैसी सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं । इन सेवाओं में मुल्तानी मिट्टी, चंदन, बेसन, हल्दी, दुध, दही, चुकंदर और चीनी जैसी प्राकृतिक सामग्रियों का उपयोग किया जाता है जो कि एक समग्र प्राकृतिक अनुभव प्रदान करती हैं।

| For more information, please contact:

Dr. Ruchi Badola
Dean & Principal Investigator I NMCG-WII Jalaj Project
Email: ruchi@wii.gov.in I Tel: +91-0135 2646263

Shri. Saurav Gawan
Project Scientist I NMCG-WII Jalaj Project
Email: sauravgawan@wii.gov.in
Tel: +91-0135 2646348

नमामि गंगे

भारतीय वन्यजीव संस्थान
Wildlife Institute of India

Arth ganga

जलज

जलज

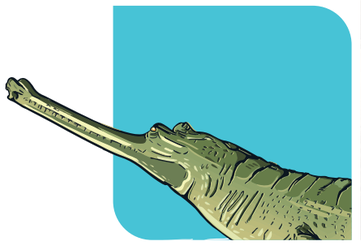

अर्थ गंगा को साकार करने के लिए नदी और लोगों को जोड़ना

गंगा नदी की जलीय जैव विविधता

गंगा नदी के सांस्कृतिक महत्व के बारे में बहुत लोगों को पता है परंतु इसके जल में पनपने वाली जैव विविधता के बारे में बहुत कम लोग जानते हैं। जहाँ एक ओर गंगा नदी में गांगेय डॉल्फ़िन *(प्लैटनिस्टा गैंगेटिका)*, गंभीर रूप से लुप्तप्राय घड़ियाल *(गेवियलिस गैंगेटिकस)* व मगर *(क्रोकोडायलस पलुस्ट्रिस)* पाए जाते हैं वहीं दूसरी ओर मीठे पानी के कछुओं और जलपक्षियों की कई प्रजातियां गंगा नदी और उसके बेसिन में प्रचुर संख्या में पाई जाती हैं। नदी में प्रजातियों की उपस्थिति एक स्वस्थ नदी के पारिस्थितिकी तंत्र का संकेत देती है। हालांकि प्राकृतिक और मानवीय गतिविधियों के परस्पर संघर्षों से बढ़ने वाली जटिलताएँ इन प्रजातिओं के जीवन को खतरे में डालती हैं, जिससे जैव विविधता संरक्षण योजनाओं का महत्व और बढ़ जाता है।

स्थायी आजीविका के माध्यम से समुदायों को संरक्षण से जोड़ना

स्थायी आजीविका के माध्यम से समुदायों को संरक्षण से जोड़ते हुए भारत सरकार के जल शक्ति मंत्रालय ने राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एन.एम.सी.जी) ने भारतीय वन्यजीव संस्थान (डब्ल्यू.आई.आई) को "जैव विविधता संरक्षण और गंगा के कायाकल्प" नामक परियोजना का काम सौंपा है जिसका उद्देश्य कई हितधारकों को एकजुट करके गंगा नदी की जलीय प्रजातियों के उद्धार के लिए एक विज्ञान-आधारित योजना को विकसित करना है।

इस परियोजना के तहत गंगा बेसिन में रहने वाले स्थानीय समुदायों "गंगा प्रहरी" नामक स्वयंसेवकों का एक प्रशिक्षित कैडर विकसित किया गया है। "प्रहरी" एक संस्कृत है जिसका अर्थ है रक्षक। गंगा प्रहरी, गंगा नदी के किनारे जैव विविधता की रक्षा करते हैं और ज़मीनी स्तर पर गंगा के कायाकल्प की सफलता में योगदान करने के साथ-साथ अपनी आजीविका भी चलाते हैं। जलज-नदी और उसके किनारे निवास करने वाले लोगों के बीच सहजीवी संबंधों को दर्शाने वाली एक पहल है जो पूरे गंगा बेसिन में गंगा नदी और उसकी सहायक नदियों के तट पर स्थापित की गई है। जलज मॉडल संसाधनों के सतत उपयोग के साथ-साथ आजीविका की संभावनाओं को बढ़ाते हैं, जहां गंगा प्रहरी कौशल सीखते हैं, वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करते हैं, और अंततः इन वस्तुओं और सेवाओं से अपनी आजीविका चलाते हैं। गंगा प्रहरियों को आजीविका के विकल्पों में प्रशिक्षित किया जाता है जैसे कि स्थानीय उपज का मूल्यसंवर्धन करना । गंगा प्रहरियों को जलज के वित्तपोषण, लेखांकन और प्रबंधन में भी प्रशिक्षित किया जाता है।

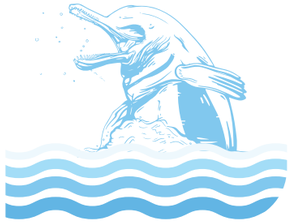

गंगा बेसिन में विभिन्न स्थानों पर स्थापित जलज उस क्षेत्र की मूल संस्कृति और समुदायों का प्रतिनिधित्व करते हैं। जलज प्रतिष्ठान समग्र सामुदायिक कल्याण, संरक्षण शिक्षा और आजीविका प्रशिक्षण के केंद्र हैं, जहां दुनिया भर से लोग आ सकते हैं और गंगा प्रहरियों के साथ गंगा के किनारे जीवन का गहन अनुभव प्राप्त कर सकते हैं। जलज का प्रबंधन गंगा प्रहरियों द्वारा किया जाता है इसलिए पर्यटक, समुदाय-आधारित संरक्षण और सतत आजीविका के अभ्यासों के बारे में भी जान सकते हैं।

सभी जलज प्रतिष्ठान अपने संबंधित स्थलों पर महत्वपूर्ण जलीय प्रजातियों पर प्रकाश डालते हैं और इन प्रजातियों के बारे में समुचित ज्ञान देते हैं। गंगा प्रहरी जागरूकता फैलाकर गंगा के किनारे जैव विविधता और गंगा स्वच्छता का संरक्षण सुनिश्चित करते हैं,इसलिए ज्यादा से ज्यादा लोगों को इस परियोजना में शामिल होने के लिए प्रेरित करना हमारी पहल का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

इन जलज केन्द्रों का भ्रमण करने वाले भारतीय नागरिक जलज केंद्रों पर गंगा प्रहरी या गंगा प्रहरी सलाहकार के रूप में पंजीकरण करके इस कैडर में शामिल हो सकते हैं। अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक भी प्रवासी गंगा प्रहरी के रूप में पंजीकरण करके विश्व की सबसे पूजनीय नदी प्रणालियों में से एक के संरक्षण प्रयासों में शामिल हो सकते हैं और गंगा के संरक्षण का हिस्सा बन सकते हैं।

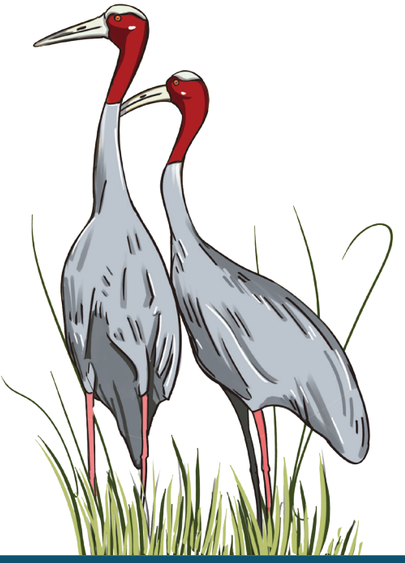

जलज के माध्यम से गंगा की झलक देखें

आपकी यात्रा को सार्थक बनाने के लिए जलज स्थलों पर गंगा प्रहरी स्थानीय सामग्रियों से तैयार किए गए उत्पाद और सेवाएँ प्रदान करते हैं। गंगा प्रहरी स्थानीय आजीविका विकल्पों को अपनाकर गंगा नदी के प्रति गौरव और अपनेपन की भावना दर्शाते हैं। सभी जलज केंद्रों में गंगा प्रहरियों द्वारा उत्पादित विभिन्न उत्पाद व सेवाएँ उपलब्ध हैं जो उन्हें आजीविका प्रदान करती हैं। स्थानीय उपज/उत्पाद खरीदने के अलावा जलज कई तरह के अनुभव भी प्रदान करते हैं जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं-

- जलज पर मंत्रमुग्ध कर देने वाली गंगा आरती का अनुभव करें और गंगा प्रहरियों के साथ गंगा नदी के किनारे गाँव के भ्रमण के माध्यम से स्थानीय समुदायों की जीवन शैली को जानें।
- गंगा नदी के किनारे गांगेय डॉल्फ़िन, बास्किंग करते मगरमच्छों, आराम करते कछुओं और चहचहाते पक्षियों की अठखेलियों का आनन्द लें।
- पर्यटक गाइड के रूप में प्रशिक्षित गंगा प्रहरियों के साथ भारतीय संस्कृति और इतिहास की कहानियों से खुद को परिचित करें।
- गंगा के किनारे गंगा प्रहरियों द्वारा प्रबंधित नर्सरियों में उगाए गए पौधों को घर ले जाएं। औषधीय पौधे जैसे एलोवेरा,नीम,तुलसी और हल्दी व केला, पपीता जैसे फल देने वाली वृक्ष की प्रजातियाँ, गंगा प्रहरियों द्वारा अपने घरेलू बगीचों में उगाई जाती हैं।
- जैव-निम्नीकरणीय कचरे का उपयोग करके गंगा प्रहरियों द्वारा तैयार जैविक-खाद भी आगंतुक घर ले जा सकते हैं।
- घाट पर चढ़ाए गए सूखे फूलों से बनी अगरबत्ती और धूपबत्ती घर ले जाएं। लैंटाना, उष्णकटिबंधीय सदाबहार झाड़ी जिसे भारत में एक आक्रामक उपजाति माना जाता है उसका उपयोग इन अगरबत्तियों को बनाने के लिए किया जाता है।